चित्रतत्वों के सन्दर्भ में रंगों की प्रासंगिकता एवं अक्षपटल पर रंगों का प्रभाव

डा० कंचन कुमारी
प्रशिक्षक
ड्राइंग एंड पोंटिंग विभाग
डी.इ.ऑय दयालबाग
आगरा, उत्तरप्रदेश, भारत

सारांश

मानव ने अपनी भावनाओं की कई माध्यमों से अभिव्यक्ति की है। भारत में कला लोकरंजन का पर्याय माना गया है। यह भावानुभूति, सौन्दर्यानुभूति की संवाहिका रही है। किसी भी देश की संस्कृति उसकी अपनी आत्मा होती है, जो उसकी सम्पूर्ण मानसिक निधि को सूचित करती है। चित्रकार प्रतिक्षण प्रकृति के विराट सतरंगी प्रभावों से प्रभावित होता रहता है, जिनसे प्रभावित होकर वह विभिन्न रूप आकार की सृष्टि कर चित्र की रचना करता है। चित्रों से चित्रकार तथा दर्शक दोनों ही विशेष प्रकार के रोमांच आनन्द का अनुभव करते है। प्रकृति स्वयं विशाल रंगशाला है, रंगनियों का वह बृहतकोश। सारें रंग ज्योति की विविध तरंगे है, प्रभा के सूक्ष्म-स्पन्द। रंगों के प्रति मनुष्य की संवेदनशीलता सहज है, सार्वभौम है, जो सीखी या सिखायी नही जाती, दूसरे वैदिक कार्य ने परिचित इतिहास से पूर्व हो सात रंग वाले, ज्योतश्मान सूर्य के सात घोड़ों को पहचान लिया था और फिर भारत के लोकमानस में रंग-रस-रूप का अभाव कभी नही रहा। नाट्यशास्त्र में रंगों से उद्दीप्त होने वाले रसों का भी उल्लेख किया गया है।

भारतीय कला के संदर्भ में कला के भावपक्ष का रंगों के प्रति महत्व सर्वोपरि रहा है। अक्षपटल पर रंगों की अनुभूति मानव अपने दैनिक जीवन में आदिकाल से करता आया है। यह मानव मानसिक क्रियाओं व भौतिक क्रियाओं को तीव्रता से प्रभावित करते हैं हर रंग अपना एक विशेष प्रभाव रखता है तथा इन्हीं प्रभावों से ही व्यक्ति के व्यवहार व रूचि का विश्लेषण किया जा सकता है।

मुख्य शब्दः चित्रतत्व, सन्दर्भ, प्रासंगिकता, अक्षपटल, प्रभाव

"Beauty is no quality in flings three selves; it atheists merely in the mind Lachish Contemplates them." [Hume]

मनुष्य के साथ ही साथ कला सृजन का इतिहास भी आरम्भ होता है। मानव ने अपनी भावनाओं की कई माध्यमों से अभिव्यक्ति की है।यह भावानुभूति, सौन्दर्यानुभूति की संवाहिका रही है। प्रारम्भ में जब असहाय मानव उन्मुक्त प्रकृति की गोद में संघर्षमय जीवन व्यतीत कर रहे थे, तब से लेकर अब तक उसने अपने भावों को चित्रों के माध्यम से व्यक्त किया है। भारतीय कला पुरातनता, धार्मिकता, एकीकरण और समन्वय के साथ-साथ 'सर्व जनहिताय एवं सर्व जन सुखाय' के आदर्शों का साकार रूप है।

किसी भी देश की संस्कृति उसकी अपनी आत्मा होती है, जो उसकी सम्पूर्ण मानसिक निधि को सूचित करती है। यह किसी एक व्यक्ति के सुकृत्यों का परिणाम मात्र नहीं होती, अपितु अनगिनत ज्ञात एवं अज्ञात व्यक्तियों को निरन्तर चिन्तन एवं दर्शन का परिणाम होती है। किसी भी देश की काया संस्कृति के आत्मिक बल पर ही जीवित रह पाती हैं। सम्पूर्ण कलाऐं मनुष्य की सौन्दर्यवृत्ति का परिणाम है।

रंग प्रकाश का एक गुण है, प्रसिद्ध विद्वान एफ-ए-टेलर ने कहा है-रंग किसी वस्तु के गुण की बजाय प्रकाश का गुण है, ये तरंग है जो मस्तिष्क में आँखों के माध्यम से पहुचती है।

चित्रकार प्रतिक्षण प्रकृति के विराट सतरंगी प्रभावों से प्रभावित होता रहता है, जिनसे प्रभावित होकर वह विभिन्न रूप आकार की सृष्टि कर चित्र की रचना करता है। चित्रों से चित्रकार तथा दर्शक दोनों ही विशेष प्रकार के रोमांच आनन्द का अनुभव करते है। आँखों के लिए आनन्द का यह महोत्सव रूपचेतना एवं रूपित करने को प्रवृति की दूसरी दिशा है, जिसमें रंग का बड़ा महत्व है अर्थात रंग, चित्रकला का प्रमुख माध्यम तथा द्वितीय तत्व है। रेखायें जहॉ चित्र का बाह्य ढॉचा अर्थात रूप तैयार करती है, वहॉ रंग उसमें प्राण प्रतिष्ठित करता है। छवि काव्य में व्यंजकता लाने तथा भावों को अभिव्यक्त करने के लिए रंग का प्रयोग करता है। यदि प्रकृति में रंग न हो तो हम कल्पना कर सकते है कि प्रत्येक वस्तु को पहचानने में कितनी कठिनाई होगी। अतः रंग का चित्रकला में ही नहीं काव्य तथा जीवन में भी महत्वपूर्ण स्थान है।

चित्र सं0 1, बाइसन, प्रागैतिहासिक चित्र

प्रकृति स्वयं विशाल रंगशाला है, सारें रंग ज्योति की विविध तरंगे है, यों रंगों की अपनी भाषा भी है, जिसका अर्थ हमारा मन समझता है। किन्तु बिना अर्थ भी इनकी साकेंतिकता एवं सम्मोहन आज भी वैसे ही जैसे चेतना के प्रथम स्कुरण के समय मे थे।

आदिम संस्कृतियों से लेकर आज तक मण्डनप्रिय मनुश्य ने विचित्र विधि आकारों, डिजायनों और चित्रों में रंगसाजी करके सुन्दरता को उन्मीलित किया है। रंगों के प्रति मनुष्य की संवेदनशीलता सहज है, सार्वभौम है, जो सीखी या सिखायी नही जाती, दूसरे वैदिक कार्य ने परिचित इतिहास से पूर्व हो सात रंग वाले, ज्योतश्मान सूर्य के सात घोड़ों को पहचान लिया था और फिर भारत के लोकमानस में रंग-रस-रूप का अभाव कभी नही रहा।

ताम्रयुग में रंगों के प्रति यही संवेदनशीलता हमें मालवा के मृणभाण्डों पर हुई चित्रकारी के रूप में मिलती है। जो लाल, काले एवं चाकलेटी रंग के बने हुए है। लाल रंग के पात्रों पर काले रंग को रेखाकृतियाँ तथा आकृतियाँ तथा काले रंग के पात्रों पर काले रंग के आलेखन व रूप चित्रित किये गये है, जिनका विषय हमें आगे के ऐतिहासिक युगों में भी मिला है।

नाट्यशास्त्र में वर्ग की विधि और प्रकृति या कौन सा ऐसा वर्ण है जो आकृति को गोपित रखता है कौन उसे उचित ढंग से अभिव्यक्त करता है। इसकी विधियों और कौन वर्ण आनन्दायक है किससे वैराग्य का बोध होता है, और अनुराग को सूचित करता है। नाट्यशास्त्र में चार ही रंग प्रमुख माने है - श्वेत, लाल, नील, और पीत। इन प्रमुख रंगों के संयोग से सैकड़ों भाँति के दूसरे रंग तैयार किये जाते है। वे नाट्यशास्त्र (अध्याय-2) श्लोक (60-65) में कहा है कि सफेद और पीला रंग मिलाकर पाण्डुरंग बनता है। सफेद और लाल के समिश्रण से रंग तैयार होता है। सफेद और नीला रंग मिलाने से हरित रंग तैयार होता है। नीले और लाल रंग के नियम से काशाय रंग तैयार हो जाता है। इसी प्रकार लाल पीला रंग मिलाकर गौर रंग का निर्माण होता है। इसके अतिरिक्त सोनेदार वर्णों के मिलाने से अनेक उपवर्ग तैयार हो जाते है। नाट्यशास्त्र में रंगों से उद्दीप्त होने वाले रसों का भी उल्लेख किया गया

है। जैसे श्रृंगार रस के लिए श्याम रंग, हास्य रस रंग के लिए श्वेत, करूण रस के लिए कबूतर का रंग तथा रौद्ररस के लिए रक्त रंग, वीर रस के लिए गौर रंग, भयानक रस के लिए कृष्ण रंग, बीभत्स के लिए नील रंग तथा अद्भुत रस के लिए पीत रंग का प्रयोग किया जाना चाहिये।

चित्र सं0 2, बाघ चित्र बुद्ध, समय-6वीं शती

विष्णुधम्मोत्तर पुराण के चित्रसूत्र में वर्णित पॉच मुख्य रंगों का उल्लेख आया है जो है, श्वेत, पीत, लाल, कृष्ण, और नील।ऐसा लिखा है इसी प्रसंग में आगे बताया गया है कि नीले रंग में मिलाकर तैयार किया हुआ रंग उत्तम होता है, चाहे वह शुद्ध हो श्वेतमिश्रित हो या उसमें नीला रंग डाला गया हो उसे श्वेत रंग की न्यूनाधिकता से या समान मिश्रण से तीन प्रकार का बनाया जा सकता है। यदि नीले रंग में सफेद पीला रंग मिला लिया जाए तो रंग विरंग हो जाता है और उसके अनेक भेद हो जाते हैं।

लाक्षा तथा श्वेत रंग से अथवा लाक्षा तथा लोध मिलाये हुए लाल रंग से जो छवि अंकित की जाती है वह रक्त कमल की भाँति ललाई लिए श्याम तथा सुन्दर होती है उससे भी दूसरे रंगो के मिश्रण से अनेक रंग तैयार किये जा सकते है। तरह-तरह के रंग बनाने के लिए, सुवर्ण, रजत, ताबा,

अभ्रक, राजबन्त, सिन्दूर रागा, हरताल, लाख, हिंगुल और नील आदि अनेकों द्रव्य है।

प्रत्येक देश में स्तम्भनयुक्त टिकाऊ रंग तैयार करने चाहिये। लोहे का रंग रसायनिक क्रिया द्वारा तैयार किया जा सकता है। चित्रकारी के लिए इसी हेतु लोहे का रंग उपयुक्त समझा गया है अभ्रक में द्रवशीलता होती है। प्रत्येक रंग में तुलसी, भुपित, चम्पा, कुश और मौलश्री का काढ़ा डालने से टिकाउपन आ जाता है। पतले रंगों ने स्थायित्व लाने के लिए सिन्दूर और दूध का प्रयोग करना चाहिए। यदि कुछ समय के लिए उत्तम इसके रस से भिगोये हुए कपड़े से और मयूरपुच्छों से चित्र को ढंग लिया जाय तो पानी पड़ने पर भी वह चित्र नष्ट नही होता और कई वर्षो तक बना रहता है।

बाघ के चित्रों में अजन्ता के समान श्वेत, लाल, काला, नीला, आदि चटकीले रंगों का प्रयोग किया गया है। श्वेत रंग शंख से, पीला हल्दी, काला काजल से, हरा हरिताल से, लाल गेरू से तैयार किया जाता था, परन्तु सोना, चॉदी, ताबा आदि धातु से निर्मित रंगों का भी दुर्भल उपयोग ज्ञात होता है। रंगों को रासायनिक घोलों में स्थायित्व हेतु चटकीला बनाने हेतु इनमें नीम के गोंद के रस को मिश्रित किया जाता था। बाघ के चित्रों में रंग के भावों का प्रदर्शन विदित होता है इसमें सावित्क श्वेत से राजसिक लाल से तथा काले रंग से प्रदर्शित किया गया है।

चित्र सं0 3, खनिज रंग

रंगों के समिश्रण या शिल्परत्न नाम ग्रन्थ में अधिक विस्तार से विचार किया गया है।यदि सफेद, काला और पीला रंग बराबर मात्रा में मिला लिया जाये तो उनमें संयोग से भूरा रंग तैयार हो जाता है।

चित्र सं0 4,वनस्पति रंग

सफेद और काले रंग के समान मिश्रण से गजवर्ण, अर्थात हाथी के शरीर जैसा काला रंग तैयार हो जाता है। यदि समान रूप से लाल एवं पीला रंग मिला लिया जाय तो कापल के समान (मौलश्री वर्ण) रंग तैयार हो जाता है। पीला रंग एक भाग और लाल रंग दो भाग मिलाने से तो गहरा लालरंग बन जाता है। इसी प्रकार हरताल और नीले रंग के मैल से सुवापंखी रंग, लाख का रस हिंगुल में मिलाने है गहरा लाल, लाख के रस में काला रंग मिलाने से लाखी रंग और काले तथा नीले रंग को सम भाग में मिलाने में केश रंग अर्थात बालों जैसे वर्ग का रंग तैयार हो जाता है।

चित्र सं0 5, रासायनिक रंग

उपर्युक्त स्त्रोतों से प्राप्त होने वाले रंगों को विधियों द्वारा स्थायी एवं चमकदार बनाया जाता था तथा उन रंगों की विभिन्न प्रकार की हल्की एवं गहरी रंगतों का निर्माण भी किया जाता था,यह रंगते भावों के उद्दीपन, प्रकटीकरण एवं प्रतीकात्मक अंकन में भी सहायक सिद्ध होती थी।

कला की समस्त महान कृतियों में एक भावना निहित रहती है। चाहे कलाकार कितनी भी समीप या कितना भी दूर हो? यह भावना कला में निहित मानव अनुभव को बड़ा स्पष्ट करती है। एक व्यक्ति, दूसरे के समान है, कारण जीवन कुछ साधारण तत्वों द्वारा रचा गया है। जिस प्रकार भौतिक जीवन की रचना के लिये पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश आदि के सम्बन्ध आवश्यक है। उसी प्रकार चित्र के तत्वों में भी बड़ी ही प्रासंगिकता रखता है, वह सभी के साथ जुड़ा हुआ है। जो इस प्रकार से है-

रेखा के सम्बन्ध में रंग-प्रसंग

संसार की प्रत्येक वस्तु कल्पना एवं उसके स्वरूप आकार से करते हैं और आकार का निर्माण हम एक छोटे से बिन्दु से प्रारम्भ करके रेखाओं के समूह से तैयार कर पाते हैं। रेखा पदार्थ के आकार को बनाने की प्रथम पहल होती है, परन्तु रेखा की सृष्टि भी तब नहीं की जा सकती जब तक रेखा को खींचने का कोई माध्यम (रंग) ना हो।

रंग रेखा की उत्पत्ति का प्रमुख साधन होती है। इस प्रकार रेखा की अभिव्यक्ति रंग के माध्यम से ही की जाती है।

आदिकाल के समय से ही यह प्रक्रिया वर्षों से मनुष्य करता आया है। मानव ने सर्वप्रथम रेखा की ही सृष्टि की, चाहे वह कोई भी अभिव्यक्ति को व्यक्त करने के लिए की गई है। इस कारण यह कला तत्वों में प्रथम मानी गयी है।

चित्र सं0 6, चीख, हैनरी मातिस

जीवन उत्पन्न हुआ, भाव, विचार, कल्पना या सत्य अपना एक रूप ले लिया। जो मानव के मन में काल्पनिक या यथार्थ रूप में प्रकट होता है।

जीवन के प्रारम्भ होने से ही मानव की संवेदना जाग्रत हो चुकी थी। वह हर वस्तु पदार्थ की किसी न किसी आकार या रूप में कल्पना कर लेता था परन्तु इस सांसारिक जगत मं जो कुछ भी व्याप्त है वह अपना एक रंग लिये हुए होता है। तभी पता चल पाता है कि वस्तुओं में क्या भेद है। जब आकार या रूप की सृष्टि होती है तो उसके साथ-साथ रंग
अपने आप जुड़ जाता है।

चित्र सं0 7, पदमपाणिनी, अजन्ता

जिस गति से भाव मन में उत्पन्न होते हैं। उसी प्रकार मस्तिष्क माध्यम की खोज करके धरातल पर अभिव्यक्ति कर डालता हे, जिसमें रंग अपना प्रभाव अवश्य रखता है।

चित्र सं0 8, प्रकृति चित्रण

तान के संदर्भ में रंग-प्रसंग

तान एक ऐसा तत्व है जिसकी उत्पत्ति रंग से हो पाती है। यह तत्व चित्रकला में प्रकाश की मात्रा प्रदान करता है। जिसका मूल आधार रंग होता है। बिना रंग के यह तत्व अपना अस्तित्व खो देता है। इन्हीं दोनों का सम्बन्ध चित्र में या तो प्रकाश को या अंधकार का अपनी अभिव्यक्ति के स्वरूप में व्यक्त कर पाता है।

चित्र सं0 9, प्रकृति चित्रण

पोत के संदर्भ में रंग-प्रसंग

जिस प्रकार रेखा, रूप, तान इत्यादि अपना सम्बन्ध रंग से रखते हैं उसी प्रकार पोत, पदार्थ की बनावट या सतह होती है। जो पदार्थ के गुण या विशेषता को व्यक्त करती है, जिसकीअनुभूति रंग द्वारा चित्रकार प्रकट करता है।

वैसे तो हर वस्तु अपनी बनावट रखता है जो या तो कृत्रिम होती है, या फिर प्राकृतिक होती है। परन्तु चित्र रचना में बनावट का स्पष्टीकरण रंग से ही होता है एवं पोत के रंग संयोग होता है। इस प्रकार बिना रंगके पोत को व्यक्त करना कठिन हो जाता है।

अन्तराल के संदर्भ में रंग-प्रसंग

चित्रकार के सामने कृति अंकन करने हेतु धरातल का जो भाग सामने होता है वहीं अन्तराल कहा जाताहै। जिसका सम्बन्ध रंग से होता है क्योंकि उसका भी एक रंग होता है जो कलाकार द्वारा अभिव्यक्त की जाने वाली कलाकृति को प्रभावित करता है एवं उस कलाकृति के

चित्र सं0 10, ईसा मसीह दृश्य

साथ अपना सम्बन्ध बना लेता है। यह चित्रतत्व का वह भाग होता है जो हमें मुख्य रूप से आकर्षित करता हैं।

अक्षपटल पर रंगों की अनुभूति मानव अपने दैनिक जीवन में आदिकाल से करता आया है। हर रंग अपना एक विशेष प्रभाव रखता है तथा इन्हीं प्रभावों से ही व्यक्ति के व्यवहार व रूचि का विश्लेषण किया जा सकता है।इस प्रकार रंग अपने अलग-अलग प्रभाव रखते हैं जो इस प्रकार हैं-

लाल रंगः-लाल रंग सबसे अधिक तीव्र होता है तथा इसमें सबसे अधिक सर्वश्रेष्ठ शक्ति होती है। यह घनात्मक होता है इस रंग की कम्पन गति कम व तरंगें की लम्बाई सबसे अधिक होती है। इस कारण इस रंग का प्रभाव अन्य रंगों की अपेक्षा मनुष्य पर सबसे अधिक पड़ता है। इसके साथ ही साथ यह रंग उत्तेजना, उल्लास, आनन्द आदि के साथ कुछ विपरीत प्रभाव जैसे क्रोध, क्रूरता आदि का प्रभाव भी मानव के मस्तिष्क पर डालता है।इन्हीं रंगो के मिश्रण के फलस्वरूप अनेक लाल रंगीय रंगते भावनाकूल प्राप्त होती थी लालरंग प्रेम, भक्ति, मंगल (शुभ), विलास, समृद्धि, वीरता, हिंसा एवं सफलता का प्रतीक माना जाता है। रक्त एवं स्वतन्त्रता का रंग भी समझा जाता है। जीवन के स्त्रोतों सूर्य एवं सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा को भी लाल रंग

प्रियहै।

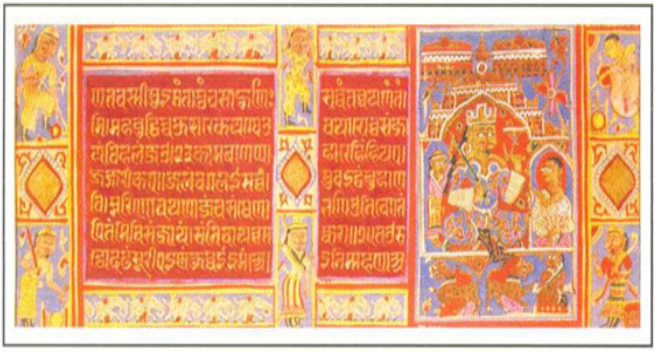

चित्र सं0-11, जैन पाण्डुलिपि, जैन शैली, समय 1500-25

इसी भाँति सौन्दर्य सृष्टि के रचयिता मालवा चित्रकारों को भी अपने लघुचित्रों में लाल रंग प्रिय था, तभी तो लघु चित्रों में अधिकांशतया लाल रंग की पृष्ठभूमि में चित्रण करने को परम्परा दिखायी देती है। अपभ्रंशीय शैली में बने हुए माण्डु कल्पसूत्र की रचना लाल रंग की पृष्ठभूमि में ही हुई है। जो उस समय की समृद्धि का प्रतीक है तथा आनन्द का चिन्ह है माण्डु कल्पसूत्र चित्र में लाल रंग का प्रयोग। कल्पसूत्र के समान ही लाल रंग के धरातल में चित्रित है। यह रंग सुर्ख लाल जो वीर रस का घोतक है।

चित्रों में लाल रंग भक्ति के प्रतीक के रूप में प्रयुक्त हुआ है। कहीं-कहीं सम्पूर्ण चित्र का धरातल चमकीले लाल रंग से भरा गया है। कहीं आकृतियों के परिधानों, सुहागों के चिन्हों जैसे वेंदी, चूड़ी, महावर इत्यादि में श्रृंगारिक भाव को तथा, भक्ति को व्यक्त करने के लिए लालरंग प्रयुक्त हुआ है।

रामायण चित्रो में भी इसी भाँति सीता की अग्नि-परीक्षा चित्र में अग्नि दाहकता तथा परीक्षा की सफलता के प्रतीक रूप में धरातल में भी लाल रंग है। कही-कहीं आयुधों को लाल रंग से तथा देवी को लाल

परिधानयुक्त चित्रित किया गया है।

चित्र संख्या-12, सीता की अग्नि परिक्षा, विष्णु दशावतार

नायिका भेद के समस्त चित्रों में लाल रंग प्रेम देवता के प्रतीक के रूप में भरा गया है वैसे ही लाल रंग श्रृंगार का प्रतीक है। चित्र में प्रेमी कृष्ण लाल रंग का पायजामा पहने हुए है सुहागिन नायिका के वस्त्र तथा पृष्ठभूमि में वातावरण के रूप में इसे भरा गया है। कृष्ण परमात्मा का और नायिका आत्म का का प्रत्येक है अतः आत्मा रूपी नायिका परमात्मा श्रीकृष्ण की प्रेमभक्ति से आराधना करती है। इसलिए प्रेम एवं भक्ति दोनों में लाल रंग प्रयोग किया गया है। इन चित्रों में प्रकृति स्थापत्य किसी न किसी रूप में लाल रंग सर्वोपरि है।

पीला रंग

यह रंग सबसे अधिक स्वच्छ व प्रकाशमय होता है। इस कारण यह पवित्रता, ज्ञान तथा धार्मिकता का बोध कराता है। इस रंग से रक्त संचार में गति उत्पन्न होती है। इससे शरीर में स्फूर्ति आती हैं यह गहरी तानों में प्रिय नहीं माना जाता, साथ ही प्रसन्नता, गर्व प्रकाश तथा प्रखरता को व्यक्त करता है। रामरज, पियोड़ी, हरिताल, हल्दी, केसर, मुल्तानी मिट्टी आदि से पीला

रंग प्राप्त होता है। टेसू आदि के फूलों से भी रंग को बनाया जाता है। इन रंगों को रासायनिक विधियों द्वारा पक्का एवं टिकाऊ बनाया जाता है। जोचित्रण के लिए युक्त होता है। वैसे पीला रंग बसन्त तथा सूर्य के ताप एवं प्रकाश का प्रतीक है। साथ ही पीला रंग ताप और प्रेमियों के प्रेमज्वर का प्रतीक भी है।दीपक राग में दीपक के प्रकाश के रूप में कमरे वाले धरातल में भरा हुआ है। बसन्त राग में भी इस रंग का प्रचुर प्रयोग है। चित्रों में सूर्य को पीले रंग से बनाया गया है। प्रकृति, वृक्षों के फूलों आदि तथा तनों में भी इस रंग का प्रयोग हृदयग्राही है।

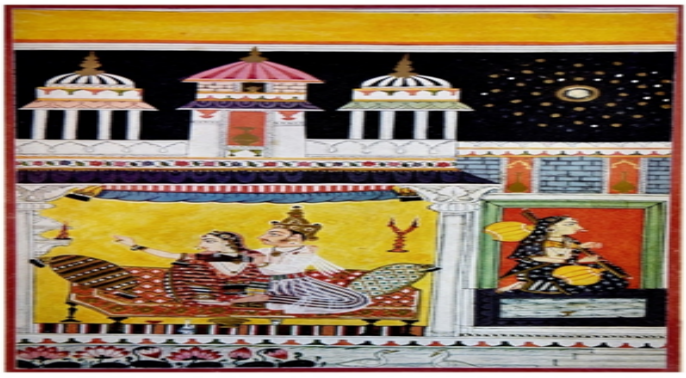

चित्र संख्या-13, दीपक रागिनी, रागमाला

हरा रंग

यह रंग प्रकृति में सर्वाधिक पाया जाता है। शीत प्रकृति का रंग होने के कारण यह मन से चंचलता तथा बैचेनी को दूर रखता है। साथ ही साथ मन को स्वच्छ करने वाला होता है। इस कारण यह रंग शीतलता, स्फूर्ति, सुरक्षा तथा स्वच्छता का प्रभाव छोड़ता है।

नीला रंग

यह रंग, आशा, आनन्द, दूरी, स्थिरता शीतलता, राजस्व आदि

प्रभावों को प्रदर्शित करता है। यह शांत रंगत है। यह रंगत आँखों को सुखद तथा विश्रामता प्रदान करती है।नीला रंग, लाजबर्द तथा नील के रूप में प्राप्त होता है। प्राचीन काल में यह रंग भारत में चित्रण कार्यो में प्रयुक्त होता रहा है। अजन्ता के भित्तिचित्रों में यह विशेष रूप से गहरा नीला लाजवर्द तथा राजवर्द नाम से प्रसिद्ध रंग रहा है। इस रंग का विस्तृत विवेचन विष्णु धर्मोत्तमर पुराण, मानसोल्लास आदि प्राचीन ग्रन्थों मेँ मिलता है। प्रारम्भिक कल्पसूत्र चित्रों में इसका खूब प्रयोग किया गया है, वनस्पति से जो नीला रंग तैयार करते है

चित्र संख्या-14, कृष्ण चित्रण, नाथद्वारा

, उसमें देशी नील पौधौं से प्राप्त की जाती रही है। मेवाड़ में अकोला, सांगानेर, आदि स्थानों में नील की खेती भी होती थी, जिससे डलीदार नील, बताशी नील भी तैयार होता था, प्राचीन काल से ही कपड़ो को रंगायी तथा चित्रण हेतु महत्वपूर्ण रंगों में एक था।उपर्युक्त नीले रंगों में भी विविध रंगों के मिश्रण के फलस्वरूप नयी रंगते तैयार की जाती थी, जैसे हरा रंग मिलाकर या सफेद रंग मिलाकर इत्यादि।

अलंकरण, वस्त्रों, पशु-पक्षियों तथा स्थापत्य में कही-कही इस रंग का प्रयोग हुआ, अतः यह अनंत शान्ति का प्रतीकात्मक प्रयोग है।

काला रंग

यह रंग प्रकाश के अभाव की स्थिति हैं इसका प्रभव अन्य रंगों की अपेक्षा मस्तिष्क पर विपरीत पड़ता हैं इसका अभाव अवसाद, निराशा, दुःख, अकेलापन आदि को व्यक्त करता है। अन्धकार के प्रतीक वाले काले रंग को कागज में रासायनिक क्रिया के माध्यम से बनाया जाता था। लघुचित्रों में इस रंग से आकृतियों का अन्तिम रेखांकन किया गया है। बालों एवं चुटिलों, हाथ एवं पैर के धागों को, कमर के धागों को, म्यान को काले रंग से बनाया गया है। वृक्षों की गहराई के लिए भी इस रंग का प्रयोग हुआ है।

चित्र संख्या-15, उद्यान में दो साधु, बोस्तां-ए-सादी

पशुओं को पूँछ तथा किसी-किसी पशु को भी काले रंग से चित्रित किया गया है। हाथी को कही स्लेटी रंग सेतो कहीं काले रंग से चित्रित किया गया है। रात्रि के क्षितिज तथा राक्षस आकृतियाँ में इस रंग का प्रयोग हुआ है। लंका के राक्षसों के वस्त्रों में भी भरा गया है।

सफेद रंग

यह रंग शुद्धता, पवित्रता, शान्ति, सादगी के प्रतीक के रूप में माना जाता है।धवलता, वैराग्य, विशालता का प्रतीक सफेद रंग, सीप, खड़िया, चीनी मिट्टी तथा सफेदे के रूप में प्राप्त होता है। लघुचित्रों में यह रंग सबसे अधिक स्थापत्य में मार्बल प्रभाव से युक्त दिखाने के लिए प्रयोग में लाया गया है। पक्षियों में हंस बगुले सारस कबूतर में यह रंग भरा गया है।

चित्र संख्या-16, स्वर्ण मृग (मारीचि) का शिकार करते हुए श्रीराम

सुनहरा रंग

यह रंग स्वर्ग से बनाया जाता था। मालवा, राजस्थानी लघुचित्रों में सुनहरे रंग का प्रयोग हम प्रारम्भ से ही देखते है। माण्डु कल्पसूत्र में तो इस रंग की लिपि लिखी गयी है। बुस्तान-आॅफ-सादी की लिपि तथा चित्रों में भी इस रंग का प्रयोग हुआ है। राजस्थानी, मुगल, पहाडी, मालवा के अन्य चित्रों में समयानुसार आभूषणों आदि में इस रंग का प्रयोग हुआ है।

स्याही रंग

क्रमशः काली, लाल एवं नीली होती है। पाण्डुलिपि से लेकर फुटकर चित्रों में इसका प्रयोग हुआ है। पाण्डुलिपियों में लिपि में तथा फुटकर चित्रों में, चित्रों के पिछवाडे की लिपि में इसका प्रयोग हुआ है। जो चित्रो में

देखी गयी है। राष्ट्रीय संग्रहालय में रखे हुए बास्तान-आॅफ-सादी कल्पसूत्र में काली, नीली एवं लाल स्याही का प्रयोग, जो फारसी लिपि को लिखने में प्रयुक्त हुई है, कपड़े ताड़पत्र तथा कागज की अलग-अलग स्याहियॉ होती थी।

इस प्रकार यह सभी रंग अपना प्रभाव मनुष्य के मस्तिष्क पर डालते है।

निष्कर्ष

भारतीय कला के संदर्भ में कला के भावपक्ष का महत्व सर्वोपरि रहा है। चित्रका उद्देश्य चित्र के भाव व विषयवस्तु में ही समाहित होता है। कला सृजन में व्यंजना या अभिव्यंजना का तत्व बड़ा महत्वपूर्ण है। किसी भी संय®जन में प्रत्येक रंग का उचित स्थान ह®ना आवश्यक है।अक्षपटल पर रंगमानव मानसिक क्रियाओंको तीव्रता से प्रभावित करते हैं हर रंग अपना एक विशेष प्रभाव रखता है तथा इन्हीं प्रभावों से ही व्यक्ति के व्यवहार व रूचि का विश्लेषण किया जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *Archer, W.G - Indian Painting, London 1956*
2. *Anand, Mulkraj - Album of Indian Painting, New Delhi 1973*
3. *Brijbhushan, Jamilla - The world of Indian Miniature, Tokyo, New York, 1979*

   Chandra, Moti - Jain Miniature Painting from Western India, Ahmedabad, 1949
4. *Khare, M.D - Malwa Through the Ages, Bhopal, 1981*
5. *अग्रवाल, वासुदेवशरण - भारतीय कला प्रारम्भिक युग से तीसरी*

शती तक, पृथ्वी प्रकाशन, वाराणसी, 1966 ई0

6. *बहादुर वर्मा, अविनाश - भारतीय चित्रकला का इतिहास, प्रकाश बुक डिपो, बरेली*
7. *दास, रायकृष्ण - मध्यकालीन चित्र शैलियाँ, भारतीय भण्डार, इलाहाबाद, 1972*
8. *शर्मा, रामनाथ - मध्यकालीन भारतीय कलायें एवं उनका विकास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर,1973*
9. *डॉ.जूहीशुक्ला-कला के मूलआधार*
10. *https://www.google.co.in*
11. *https://en.wikipdia-org/wiky/persion/painting*
12. *https://www.google.co.in/images?malwa-miniatur e-painting*
13. *https://www.indianminiature.org/malwa*
14. *https://www.britannica.com/art/malwa-miniature -painting https://www.in.pinterest.com*